श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
मार्च २००९ केवल व्यक्तिगत वितरण के लिये भाग–२ अंक–२

प्रणाम।

हमें यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि न्यूज़लेटर अब देश के दूर–दराज इलाकों में भी पहुँच रहा है तथा बड़ी संख्या में अभ्यासियों द्वारा पढ़ा जा रहा है। अलग–अलग क्षेत्रों से ढेर सारे लेख हम तक पहुँच रहे हैं और उन्हें संकलित करना वास्तव में हमारे लिये प्रसन्नता की बात है।

जनवरी और फ़रवरी माह में हमारे गुरुदेव काफ़ी व्यस्त रहे। वे देश भर के दौरे पर हैं तथा इस अंक को सम्पादित करते समय मालिक उत्तर भारत का दौरा कर रहे हैं।

पूज्य लालाजी महाराज का जन्मोत्सव, ज़ोनल/केन्द्रीय प्रभारियों की संगोष्ठी, अभ्यासियों के लिये आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम, वी बी एस ई कार्यक्रम और बेंगलूर में युवाओं के लिये संगोष्ठी, इस सामयिक अंक की कुछ प्रमुख झलकियां हैं। "प्रकाश के केन्द्र" अनुभाग में शाहजहाँपुर आश्रम के बारे में बताया गया है।"विसपर्स फ्रॉम द ब्राइटर वर्ल्ड, भाग–२" जिसका ३० अप्रैल को विमोचन किया जा रहा है, हमारे गुरुदेव द्वारा हमारे लिये एक और उपहार है।

मई २००९ संस्करण के लिये संस्मरण भेजने की अंतिम तिथि १५अप्रैल,२००९ है। कृपया ध्यान रखें कि अपने संस्मरण, घटना की तस्वीरों के साथ अपने ज़ोनल प्रभारी के माध्यम से ही भेजें।

आदरसहित

सम्पादकीय दल

गुरुदेव का दौरा – जनवरी और फ़रवरी २००९

पोंगल उत्सव के दौरान गुरुदेव चेन्नई में थे और छुट्टियों में बहुत अभ्यासी मणपाक्कम आश्रम आये। इस उत्सव के दौरान गुरुदेव ने कई शादियां सम्पन्न करवाई। १९ जनवरी को गुरुदेव रामापुरम गये (यहाँ मालिक ने १९९१ में आश्रम का उद्घाटन किया था)। सत्संग करवाने के पश्चात वे चित्तूर के लिये रवाना हुए जो यहाँ से एक घंटे की दूरी पर है। वहाँ पहुँच कर उन्होंने सत्संग करवाया, जिसमें लगभग ११०० अभ्यासी सम्मिलित हुए। सत्संग करवाने के पश्चात, उन्होंने उनके लिये बनाई गई एक काटेज का उद्घाटन किया। एक निजी बातचीत में, मृत्यु के बारे में बात करते हुए उन्होंने रेलगाड़ी में यात्रा कर रहे लोगों का एक समानांतर उदाहरण दिया, जहाँ लोग उतरते हैं और नये सदस्य शामिल होते हैं तथा हम किसी के बारे में भी चिंता नहीं करते। उसी प्रकार, जब कोई सगा–संबंधी परलोक सिधार जाये तो उनके निधन के समय ऐसे व्यवहार करना चाहिये जिससे अभ्यासी की आंतरिक शांति एवं निर्मलता पर प्रभाव न पडे।

थोड़ी देर विश्राम करने के पश्चात, मालिक ने शाम को एक और सत्संग करवाया तथा एक वार्ता दी जिसमें उन्होंने लोगों को परिवर्तन को स्वीकार करने का आह्वान किया, जिसके लिये हमें ध्यान करना चाहिये। २० की सुबह को मालिक ने सत्संग करवाया और तिरुपति के लिये रवाना हो गये।

तिरुपति पँहुचने पर उन्होंने वहाँ एकत्रित लगभग १५०० अभ्यासियों को सत्संग करवाया तथा एक वार्ता दी। वे कॉटेज में एकोज़ इंडिया न्यूज़लेटर, जनवरी २००९ अंक को देखते हुए काफ़ी प्रसन्नचित दिखाई दे रहे थे और उसमें प्रकाशित तस्वीर को देखकर उनकी पुरानी यादें ताज़ा हो गई। दोपहर भोजन के पश्चात वे चित्तूर के लिये रवाना हो गये तथा अगली सुबह वे चेन्नई वापिस आ गये।

२३ जनवरी को मालिक अहमदाबाद पहुँचे। २४ की सुबह को अदलज आश्रम में जब मालिक ध्यान–कक्ष की ओर जा रहे थे तब उन्होनें वहाँ की पूर्ण शान्ति की सराहना की, जहाँ अभ्यासी उनके पहुँचने से पहले ही शान्त बैठे हुए थे। सत्संग के पश्चात बहन रंजना मेहता ने मधुर भजन प्रस्तुत किये। यद्यपि हम यह आशा कर रहे थे कि मालिक शाम को विश्राम करेंगे, लेकिन मालिक ने यह कहकर हमें आश्चर्यचकित कर दिया कि वे अपने इस दौरे के दौरान पाँच सत्संग करवाएंगे। इससे अभ्यासियों व पदाधिकारियों के लिये एक स्पष्ट संदेश था कि हमें मिशन का कार्य करने में स्वयं में तत्कालिक भावना विकसित करने की आवश्यकता है। और अपने अस्तित्व के आध्यात्मिक पक्ष को प्रमुख रूप से महत्व देने की ज़रूरत है।

२६ को सुबह सत्संग के पश्चात, मालिक ने गुजराती युवाओं के द्वारा प्रस्तुत गरबा और रास (पारंपरिक गुजराती नृत्य) देखा। फ़िर उन्होंने गुजरात और पड़ोसी राज्यों से आये लगभग १४० प्रशिक्षकों के साथ मीटिंग करने का निश्चय किया। सिटिंग देने के बाद उन्होंने एक वार्ता भी दी। वे बहुत थक गये थे इसलिये कुछ देर उन्होंने विश्राम किया।

२७ की दोपहर को मालिक दिल्ली पहुँचे। २८ की सुबह को वे ज़ोनल आश्रम गये और सत्संग करवाया। विभिन्न केंद्रों से लगभग २५०० अभ्यासियों ने सत्संग में भाग लिया। सत्संग के दौरान एक अभ्यासी के सेल फ़ोन की घंटी सुनाई दी। सत्संग के बाद मालिक ने उस अभ्यासी को, जिसके सेल फ़ोन की घंटी बजी थी, उसे स्टेज के पास आकर हॉल में उपस्थित सभी अभ्यासियों से क्षमा मांगने के लिये कहा। २९ की सुबह को वे सतकोल के लिये रवाना हो गये।

२९ जनवरी को मालिक मुरादाबाद पहुँचे। सैंकड़ों अभ्यासी गुरुदेव का अभिनंदन करने के लिये सड़क के किनारे पंक्ति में खड़े थे। उस रात मालिक रूद्रपुर में रुके और ३० की सुबह को नाश्ता करने के बाद वे सतकोल के लिये रवाना हो गये।

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
गुरुदेव का दौरा
मार्च २००९ केवल व्यक्तिगत वितरण के लिये भाग–२ अंक–२

सतकोल में गुरुदेव का अभिनंदन एक गीत के साथ किया गया। कठिन यात्रा के बावजूद, गुरुदेव ने रोचक बातचीत तथा विनम्र पूछताछ करते हुए अभ्यासियों के साथ समय बिताया। हिन्दू कैलंडर के अनुसार ३१ जनवरी को पूज्य लालाजी महाराज का जन्मदिवस था। मालिक ने कहा," यह पवित्र बसन्त मे सबसे पवित्रम है।" एक अभ्यासी ने उन्हें विशिष्ट पहाड़ी इलाके की टोपी प्रस्तुत की। उन्होंने बड़े उत्साह पूर्वक उसे पहना, बीच में कभी–कभार उसे सही तरह फ़िट करने के लिये ठीक करते।

एक फ़रवरी को मालिक अलमोड़ा गये, एक कस्बा जो विवेकानन्द स्मारक के लिये प्रसिद्ध है। जैसे ही मालिक स्मारक से गुज़र रहे थे, उन्होंने कहा, "मैने यहाँ १९५८ में ध्यान किया है। यह मेरे सहज मार्ग में आने के ६ साल पहले की बात है। मुझे यकीन है यह वही स्थान है जहाँ स्वामी विवेकानन्द आये थे।" एक अभ्यासी के घर पर भोजन करने के पश्चात, मालिक कुछ देर अभ्यासियों से मिले जो उनसे मिलने का इंतज़ार कर रहे थे। एक विद्यार्थी जानना चाहता था कि अध्ययन या ध्यान में अधिक महत्वपूर्ण क्या है। "एक विद्यार्थी को अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित करना चाहियें।" एक बहन जानना चाहती थी वह अपने पति को ध्यान करने के लिये कैसे मनाये? "उसे विवश मत करो, अभ्यास के द्वारा स्वयं को एक आदर्श व्यक्ति बनाओ ताकि तुम्हारा पति तुम्हारा अनुकरण करना चाहे।"

२ फ़रवरी को पश्चिमी कैलंडर के अनुसार लालाजी महाराज का जन्मदिवस था। सत्संग के पश्चात, तुरंत एक अभ्यासी को किसी कार्य को करते देख मालिक ने कहा,"हमें अपनी अवस्था पर मनन करना चाहिये। सत्संग के तुरंत बाद कोई गतिविधि शुरु मत करो।"उन्होंने लालाजी महाराज के जीवन पर बनी एक डी वी डी जारी की और सहज मार्ग की तर्ज़ पर बनी एक नाटिका का आनंद लिया। 'विसपर्स– भाग–२ और ३' के प्रकाशन की घोषणा के साथ उन्होंने एक वार्ता दी। ३ फ़रवरी को मालिक एक मनोहर स्थान नौकुचियाताल गये। एक अनौपचारिक बातचीत में मालिक ने कहा,"ऐसे लोग जिनके तेवर चढ़े हों उनसे दूर रहना चाहियें। संतों के चेहरे पर आनंद रहना चाहियें। सही व्यक्ति के प्रति वफ़ादारी, सही समय पर ईमानदारी और अखंडता – आध्यात्मिकता में काफ़ी मददगार साबित होती हैं।"

७ फ़रवरी को मालिक ने सोनीपत आश्रम का उद्घाटन किया। वे काफ़ी प्रसन्नचित दिखाई दे रहे थे। सत्संग के पश्चात उन्होंने एक वार्ता दी जिसमें उन्होंने कहा,"मौन ईश्वर की भाषा है, जबकि प्रेम की कोई भाषा नहीं है। अनुशासन के बिना प्रेम नहीं हो सकता और आध्यात्मिकता के बिना अनुशासन नहीं हो सकता।" उन्होंने सत्य का समर्थन करते हुए कहा, "प्रेम का कोई रूप या धर्म नहीं है और इस प्रकार केवल भिन्नता का निषेध करके ही विश्व–बंधुत्व और प्रेम की भावना को हम सब के दिलों में जगा सकते हैं। भाई गुरप्रीत ने अपनी मधुर वाणी में कुछ भक्ति गीत प्रस्तुत किये।

८ फ़रवरी को मालिक जयपुर पहुँचे। अभ्यासी गुरुदेव की एक झलक पाने के लिये पंक्तिबद्ध खड़े थे और जैसे ही मालिक वहाँ पहुँचे उनके चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ गई। १० की सुबह को मालिक ने लगभग २३०० अभ्यासियों को सत्संग करवाया जो उनके आने से काफ़ी पहले ही अच्छे से बैठे हुए थे। कुछ अभ्यासी अपने बच्चों का नामकरण करवाने के लिये उन्हें मालिक के पास लेकर आये। मालिक ने कहा कि अब से वे बच्चों का नामकरण एकमात्र शर्त पर करेंगे कि माता पिता उनके द्वारा दिये गये नाम के साथ कोई कुलनाम या गौत्र नहीं लगाएंगे। एक बहन को, जिसने कहा कि उसका पति मिशन में नहीं है, मालिक ने कहा कि वह आयेगा,"यह एक नकारात्मक विचार है जो विलम्ब करता है, तुम्हें उसे अपने साथ लाना चाहिये।"

११ की सुबह को सत्संग के पश्चात 'लक्ष्य' विषय पर महाभारत की कहानी पर आधारित एक नाटिका प्रस्तुत की गई। एक अनौपचारिक बात–चीत में मालिक ने कहा कि पूर्व नियत जीवन जैसी कोई चीज़ नहीं है। यानि कि सब कुछ हो सकता है, लेकिन क्या होगा यह हमारी 'इच्छा शक्ति' पर निर्भर करता है।

१२ की दोपहर को गुरुदेव जयपुर से ज़ोनल आश्रम, दिल्ली आ गये। शाम को उन्होंने सत्संग करवाया। चारों ओर उत्सव का माहौल था। पहली बार गुरुदेव रात को कॉटेज में ही रुके। सुबह उन्होंने सत्संग करवाया और दोपहर को भोपाल के लिये रवाना हो गये। भोपाल में उन्होंने १५ फ़रवरी को ध्यान–कक्ष का उद्घाटन किया। आश्रम भोपाल से १५ कि. मी. दूर आदमपुर छावनी नामक गाँव में स्थित है। सत्संग के पश्चात उन्होंने दो विवाह सम्पन्न करवाये। कुछ देर बाद वे सड़क मार्ग से इंदौर के लिये रवाना हो गये। १६ को गुरुदेव ने इंदौर आश्रम में ध्यान–कक्ष का उद्घाटन किया। भाई अजय भट्टर ने इस अवसर पर कहा," आश्रम का उपयोग ध्यान करने के लिये तथा मालिक को हमारा एकमात्र लक्ष्य मानकर उन्हें अपने अंदर खोजने के लिये करना चाहियें।" उन्होंने यह भी कहा कि आने वाले समय में और अधिक लोग आध्यात्मिकता को स्वीकार करेंगे। यह आश्रम शहर के बीच स्थित है, जिसमें लगभग ८०० लोग बैठ सकते हैं। मालिक १८ की सुबह को मुंबई के लिये रवाना हो गये। उन्होंने वहाँ एक दिन बिताया। अपना दौरा और स्थानों पर जारी रखने से पहले, कुछ समय विश्राम के लिये, १९ को वे कोलकाता के लिये रवाना हो गये।

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
मुख्यालय समाचार
मार्च २००९ केवल व्यक्तिगत वितरण के लिये भाग–२ अंक–२

निबंध–लेखन प्रतियोगिता के परिणाम

वर्ष २००८ में आयोजित निबंध प्रतियोगिता, जिसमें देश भर से लगभग ७५,००० विद्यार्थियों ने भाग लिया, उसका परिणाम घोषित किया गया। प्रतियोगिता अंग्रेज़ी व हिंदी भाषाओं के साथ–साथ कई क्षेत्रीय भाषाओं में आयोजित की गई। कनिष्ठ वर्ग के लिये विषय था–" सत्य साहस है" और वरिष्ठ वर्ग के लिये विषय था–"आत्म–सम्मान और आत्म–विश्वास चरित्र का निर्माण कर सकते हैं "।

कनिष्ठ वर्ग के अंग्रेज़ी अनुभाग के विजेता हैं– अकांक्षा (पुणे), अमल (दिल्ली), सुषमा (हैदराबाद), अरुण (वदागरा, केरल), देबोरप्रिय(रांची), दिव्या (गाज़ीपुर, यू.पी.), नैना (मोहाली), सनिका (नासिक) और सिद्धांत (शक्ति नगर, यू.पी.)।

वरिष्ठ वर्ग के विजेता हैं– अनुराधा (नैनीताल), नरेश (जयपुर), समीना (इंदौर), अनूप (नमक्कल,तमिलनाडु), दिव्या (नोएडा), इशिका (कुल्लु, हि.प्र.), कीतन (चेन्नई), स्नेहल (पुणे) और वरुण (जालंधर)।

नये प्रकाशन

"लाइफ़ ऑफ़ लालाजी" डी वी डी और पुस्तक का सेट

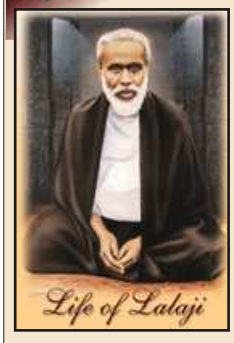

पूज्य लालाजी महाराज के जन्मोत्सव के पावन अवसर पर एक डी वी डी सेट "लाइफ़ ऑफ़ लालाजी" प्रस्तुत करते हुए हमें बहुत खुशी हो रही है। कई वर्ष पहले पूज्य लालाजी महाराज के जीवन और शिक्षाओं पर आधारित यह फ़िल्म पुणे केन्द्र के अभ्यासियों द्वारा अभिनय कर तैयार की गई थी और वीडियों कैसेट के रूप में जारी की गई थी। इस फ़िल्म की लोकप्रियता तथा लगातार हो रही मांग को देखते हुए डी वी डी एवं पुस्तक के सेट को एक सुंदर पैक में पुनः जारी किया गया है, जिसमें लालाजी महाराज की कुछ दुर्लभ तस्वीरें भी हैं।

सहज मार्ग विवरणिका (ब्रोचर)

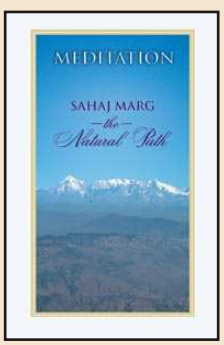

यह विवरणिका आध्यात्मिक अकांक्षियों के लिये सहज मार्ग ध्यान–पद्धति के बारे में एक अदभुत परिचय देने का कार्य कर सकती है। यह सामान्य परिचयात्मक सामग्री, सहज मार्ग में शामिल होने के इच्छुक लोगों को देने के लिये बनाई गई है। इसमें सहज मार्ग साधना की मुख्य विशेषताओं के साथ, स्थानीय सम्पर्क सूचना की जानकारी भी दी गई है और इसे सहज मार्ग के अनौपचारिक सत्रों के दौरान भी दिया जा सकता है।

भारत में मिशन के कार्य की समीक्षा

तमिलनाडु में मनाया जाने वाला किसानों का त्यौहार–पोंगल के एक सप्ताह पूर्व, बाबूजी मेमोरियल आश्रम, चेन्नई में लगातार गतिविधियां हुई।१० से १२ जनवरी को तीन दिन के लिये मिशन के पदाधिकारियों का २०० लोगों का समूह, जिसमें पूरे देश भर से कार्यकारी समिति के सदस्य, ज़ोनल प्रभारी और केन्द्र प्रभारी अपने कार्य की गहन समीक्षा करने के लिये एकत्रित हुए।

१० जनवरी को मालिक ने ज़ोनल प्रभारियों को संबोधित किया तथा अगले दिन फ़िर से पूरी सभा को संबोधित किया। इन दोनों वार्ताओं में, मालिक ने मिशन में अनुशासन के गिरते स्तर पर दुख ज़ाहिर किया और कहा कि यदि अनुशासन की उपेक्षा की गई तो इससे मिशन में विघटन शुरु हो जायेगा। उन्होंने बड़े अफ़सोस के साथ यह कहा कि पूज्य बाबूजी महाराज ने १९६६ में बड़े दुख के साथ यह कहा था कि वे अभ्यासियों को धर्म और जाति के भेद–भाव को भुला कर आपस में जोड़ने के प्रयास में विफ़ल रहे हैं। आज इसके ४० वर्ष बाद भी मिशन में जात–पात का भेदभाव खत्म नहीं हो पाया है।

गुरुदेव ने कहा कि, चूंकि हम मालिक को दिव्य रूप से प्रेम करने में सक्षम नहीं हैं, हम उनकी सेवा करके उनकी कृपा को आकर्षित कर सकते हैं यह एक सरल तरीका हमारे पास उपलब्ध है।

सारांश में, गुरुदेव द्वारा हम में बाहरी रूप से परिवर्तन न पाये जाने का आंकलन एक दुखद अनुभव था, जिसका उल्लेख वे अपनी हाल ही में दी गई वार्ताओं और टिप्पणियों में लगातार करते रहे हैं।

केन्द्र प्रभारियों के लिये आयोजित की गई कार्यशाला के दौरान सहभागियों को केन्द्र में प्रशासन, लेखा–जोखा, प्रकाशन, सुरक्षा, सदस्यता–प्रशासन इत्यादि पर बहुत सी प्रस्तुतियों के साथ–साथ नवीनतम जानकारी और संक्षिप्त विवरण दिया गया। सहभागियों ने प्रस्तुतकर्ताओं के साथ बातचीत की और अपनी शंकाओं का निवारण किया। इस प्रयोग को हर दो वर्ष में एक बार किये जाने की योजना बनाई गई है।

विशिष्ट प्रकाशन "विसपर्स फ़्रॉम द ब्राइटर वर्ल्ड– ए सेकेंड रिवेलेशन " का ३० अप्रैल, २००९ को विमोचन किया जायेगा।

प्रिय गुरुदेव ने स्वैच्छिक दान–राशि पर हमारा अपना विशिष्ट संग्राहक संस्करण प्राप्त करने के लिये हमें सक्षम बना दिया है। अधिक जानकारी के लिये कृपया अपने स्थानीय एस आर सी एम प्रशासक से सम्पर्क कीजिये।

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
ज़ोनल की गतिविधियां
मार्च २००९ केवल व्यक्तिगत वितरण के लिये भाग–२ अंक–२

पूज्य लालाजी महाराज का जन्मोत्सव

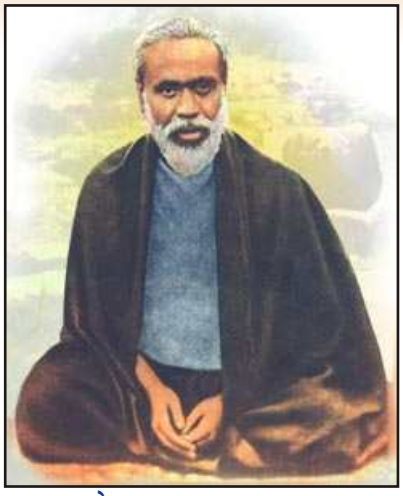

अलुवा, केरल

अलुवा केन्द्र में सुबह ९ बजे व ५ बजे के सत्संग के साथ पूरे दिन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। पूज्य लालाजी के जीवन पर एक वीडियो दिखाया गया जो हमारे आदिगुरु द्वारा सुझाये गये सहज मार्ग के सिद्धान्तों पर आधारित था। चूंकि वीडियो हिन्दी में था, उसका मलयालम में अनुवाद किया गया, जिससे कि अभ्यासियों को समझने में आसानी हो। सभी सम्मिलित लोगों की संतुष्टि के लिये अनुवाद को थोड़े–थोड़े अन्तराल में पढ़ा गया। इससे सभी को मालिक के सतत–स्मरण में रहने में सहायता मिली जो कि इस उत्सव का उद्देश्य था।

गुलबर्गा, कर्नाटक

गुलबर्गा जिले में एक पूरे दिन के कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमे विभिन्न जगहों से करीब २८० अभ्यासियों एवं ७० बच्चों ने भाग लिया। अभ्यासियों ने एक दिन पहले से उत्सव के लिये आना शुरु कर दिया जहाँ पर भोजन एवं रात में रुकने की व्यवस्था की गयी थी। २ फ़रवरी को प्रात: ९ बजे सत्संग आयोजित हुआ। नाश्ते के पश्चात लालाजी महाराज के जीवन पर एक वीडियो दिखाया गया।

दोपहर भोजन के पश्चात बच्चों द्वारा प्रस्तुत कविता एवं गीत और अभ्यासियों द्वारा प्रस्तुत भक्ति गीतों का कार्यक्रम हुआ। सांयकालीन सत्संग ५ बजे हुआ। पूरे दिन वातावरण में विशिष्ठ कृपा महसूस हुई और यह काफ़ी अभ्यासियों ने व्यक्त किया। यह कार्यक्रम प्रेम और सादगी से भरा हुआ था जिसे सभी अभ्यासियों ने काफ़ी सराहा।

वी.जी.टी., आन्ध्र प्रदेश

गुन्टूर जिले के काज़ीपेट के नये क्षेत्रीय आश्रम (५० एकड़) में उत्सव का आयोजन किया गया। आसपास के उपकेन्द्रों से मिलाकर बच्चों समेत एक हजार से ज़्यादा अभ्यासियों ने उत्सव में भाग लिया।

प्रात:कालीन सत्संग के बाद लालाजी महाराज की जीवनी और उपदेशों का पठन हुआ। बच्चों ने अपनी प्रतिभाशाली चित्रकारी, कविता पाठ एवं लघु नाट्य के माध्यम से सहज मार्ग के सार को उजागर किया जो कि प्रेरणाप्रद था। और साथ ही यह नई पीढी पर सहज मार्ग के प्रभावकारी असर और उनके आध्यात्मिक विकास के प्रति वचनवद्धता को स्पष्ट रूप से साबित करता है।

उप सचिव, भाई ए. पी. दुरई ने अभ्यासियों को प्रेरित करते हुए आयोजन में भाग लिया। उन्होंने सांयकालीन सत्संग आयोजित किया और उसके बाद प्रशिक्षकों की सभा की अध्यक्षता की।

कटक, उड़ीसा

दो दिन के उत्सव में उड़ीसा जोन के सभी केन्द्रों से करीब १६० अभ्यासियों ने भाग लिया।

१ फ़रवरी को सत्संग के पश्चात मास्टर की वार्ता के कुछ प्रमुख अंश पर जैसे कि मिशन का विकास, विश्वव्यापक आर्थिक मन्दी, मिशन की गतिविधियों को बेहतर बनाना और ज़्यादा से ज़्यादा अभ्यासियों को भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करना आदि पर विचार विमर्श हुआ।

दो फ़रवरी को सत्संग के बाद उन सिद्धान्तों के ऊपर चर्चा हुई जिनको लालाजी ने ज़ोर देकर सहज मार्ग साधना का अभिन्न अंग बताया है।

गुणवत्ता के विकास जैसे आत्म–अनुशासन, बिना किसी उम्मीद के दूसरों की सेवा, अपने आपको तैयार करना ताकि अपने अन्दर बदलाव लाने में हम अपने मालिक की मदद कर सकें आदि विषयों पर भी चर्चा हुई।

अगले सत्र में अभ्यासियों ने मालिक और मिशन में कैसे विश्वास बढाये और आत्म–विश्लेषण के ऊपर अपने व्यक्तिगत विचार प्रकट किये। शाम को बच्चों एवं कुछ युवा अभ्यासियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। सभी ने आश्रम में दिव्य वातावरण को महसूस किया एवं उनकी कृपा से लाभान्वित हुए।

मुंबई, महाराष्ट्र

मुम्बई केन्द्र के अभ्यासियों ने उत्सव में बड़े ही उत्साह के साथ भारी संख्या में भाग लिया।

रविवार प्रात: ध्यान के साथ उत्सव का प्रारम्भ हुआ उसके बाद भजन और लालाजी महाराज की जीवनी का पठन हुआ। लालाजी की शिक्षाओं से "अभ्यासियों के कर्तव्य" पर भी एक वार्ता हुई। दोपहर में युवाओं ने "मध्य पूर्व के सूफ़ी सन्त" के ऊपर एक नाट्य प्रस्तुत किया जिसने सभी के विचारों में हलचल कर दी।

२ फ़रवरी को प्रात:कालीन सत्संग के बाद बहनों द्वारा भजन और बच्चों द्वारा नाट्य की प्रस्तुति हुई। मध्यान्ह में "लालाजी महाराज के जीवन" के ऊपर एक फ़िल्म दिखाई गयी ताकि सभी उनकी शिक्षा के सार को आत्मसात कर सकें। आश्रम का समूचा वातावरण परमानन्द से इस तरह भरा था कि सभी लोग २ दिन के उत्सव के बाद दिव्यता से आलोकिक होकर गये जिसका समापन शाम के सत्संग के साथ हुआ।

अहमदनगर, महाराष्ट्र

इस शुभ दिन पर महाराष्ट्र के कई केन्द्रों से करीब २१६ अभ्यासियों ने उत्सव में भाग लिया।

सुबह के सत्संग के बाद, लालाजी की याद में भजन, बच्चों द्वारा नाट्य, चर्चा एवं वार्ताओं का आयोजन किया गया। साथ ही अहमदनगर एवं आसपास के इलाके के आध्यात्मिक आकांक्षियों के लिये एक "ओपन हाउस" का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम शिवराल के भाई आर.डी. कुलकर्णी और सतारा की बहिन केल द्वारा आयोजित किया गया था।

इस उत्सव का निष्कर्ष सही मायने में भाई सुभाष वैद्य ने इन शब्दों में व्यक्त किया " हमने अपने पूज्य मालिक से जो भी पाया है उसको सभी में खुले दिल से बांट देना चाहिये ताकि मालिक की कृपा सदा हम पर बनी रहे"।

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
ज़ोनल की गतिविधियां
मार्च २००९ केवल व्यक्तिगत वितरण के लिये भाग–२ अंक–२

ध्यानकक्ष का उद्घाटन, वल्साड, गुजरात

पूज्य लालाजी महाराज के जन्मोत्सव के अवसर पर भाई सी. राजगोपालन ने वल्साड में ध्यान कक्ष का उद्घाटन किया। जिसके साथ आश्रम में रविवार के सत्संग का प्रारंभ हुआ। दक्षिण गुजरात के विभिन्न केन्द्रों से लगभग ३०० अभ्यासियों ने कार्यक्रम में भाग लिया, जिसमें लालाजी महाराज का वीड़ियो, अभ्यासी भाईयों द्वारा वार्तायें और प्रशिक्षकों की मीटिंग शामिल थी।

यह आश्रम राष्ट्रीय राजमार्ग ८, जो मुम्बई और दिल्ली को जोड़ता है, से लगभग ४ किमी दूर, वल्साड–धरमपुर राज्यमार्ग के पास डेढ़ एकड जमीन पर फैला हुआ है। ध्यानकक्ष में लगभग २५० अभ्यासी बैठ सकते हैं। आश्रम में गोदाम और सुरक्षाकर्मी के लिये कक्ष के साथ –साथ एक शौचालय ब्लाक और बाल केन्द्र भी है।

वल्साड में उद्घाटन समारोह से पूर्व सूरत, नवसारी और वापी के आसपास के केन्द्रों में सत्संग हुआ। सत्संग के बाद वार्ता और प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन हुआ।

प्रशिक्षकों के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम, (पीटीपी बैच १)

इस कार्यक्रम के पहले बैच का आयोजन, दक्षिण तमिलनाडु, २ बी ज़ोन के प्रशिक्षकों के लिये मलमपुझा रिट्रीट सेंटर में हुआ। लगभग ४६ प्रशिक्षकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

इस कार्यक्रम में आध्यात्मिक शिक्षक के लिये अनिवार्य तत्व, संघकार्य (टीम वर्क), प्रशिक्षक का काम और सद्भाव जैसे विषय शामिल किये गये। सभी विषयों की अच्छी तरह से तैयारी की गयी थी और उन्हे बहुत सावधानी, सोच–विचार और प्रेम के साथ प्रस्तुत किया गया था। सभी ने महसूस किया कि सहभागियों की लगन और वहाँ उपस्थित लोगों की ग्रहणशीलता के कारण यह सत्र अत्यन्त प्रभावशाली रहा।

मलमपुझा रिट्रीट सेन्टर का वातावरण और सुविधायें कुछ खास ही थी जो ऐसे कार्यक्रमों के लिए ही बनायी गयीं हैं । यह कार्यक्रम दोपहर के भोजन और चाय के लिये पर्याप्त समय देने के बाद १० घन्टों तक चला।

सभी ने मालिक के प्रति कृतज्ञता महसूस की क्योंकि इन दो दिनों में हुए सभी कार्यक्रम मालिक के प्रेम, अनुमति और उनकी उपस्थिति से ही सम्भव हो सके।

केरल प्रशिक्षक संगोष्ठी (सेमिनार), अलुवा

३१ जनवरी से १ फ़रवरी २००९ तक केरल के सभी प्रशिक्षकों के लियें, अलुवा में एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी की अध्यक्षता जोन–प्रभारी भाई के यु मोहन ने की। इस कार्यक्रम का उद्देश्य, चेन्नई में आयोजित, सभी जोन–प्रभारियों और केन्द्र–प्रभारियों की मीटिंग में हुई चर्चा के मुख्य तत्वों को सबके साथ बाँटना था। इस संगोष्ठी में भी चेन्नई में हुई मीटिंग के तरीकों को अपनाया गया। तीन आयोजनकर्ताओं ने विभिन्न विषयों जैसे केन्द्र प्रभारी की जिम्मेंदारियां, चरित्र–निर्माण, आश्रम, सहज मार्ग–विवाह, पुस्तकों की बिक्री और प्रकाशन, सुरक्षा, लेखा–जोखा इत्यादि पर वार्तायें दी। प्रत्येक वक्ता ने ११ विषयों को लिया। यह संगोष्ठी मिशन के कार्यकर्ताओं के काम में उनके ज्ञान को बढ़ाने में काफ़ी मद्दगार साबित हुई और उनके काम को एक दिशा दी।

उत्तर कर्नाटक प्रशिक्षक संगोष्ठी

२५ दिसंबर २००८ को गुलबर्गा में उत्तर कर्नाटक ज़ोन के प्रशिक्षकों के लिये एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । ३० प्रशिक्षकों ने इसमें भाग लिया। इस कार्यक्रम में ज़ोन–प्रभारी भाई राजू काशमपुरकर का भाषण शामिल था। दिन भर की बाकी गतिविधियों में काम पर प्रतिबिम्ब, समूह–चर्चा, सवाल–जवाब आदि शामिल थे। उसके बाद केन्द्र स्तर की गतिविधियों जैसे खुले मंच का आयोजन, अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम, पूरे दिन के कार्यक्रम और नजदीकी केंद्रो के लिए सिटिंग्स का चार्ट बनाना और उसकी रपट बनाना आदि विषयों पर चर्चा हुई। मालिक की ओडियों सीडी चलायी गयी जिसमें प्रशिक्षकों के काम के विषय में कुछ महत्वपूर्ण टिप्पणियां दी गयीं थीं। उसके बाद सत्संग हुआ। सभी प्रशिक्षक इस कार्यक्रम से बहुत ही लाभान्वित हुए और उन्होने कहा कि ऐसे कार्यक्रम हर छह महीने में होने चाहिए।

"एक इन्सान और उसके भीतर का भगवान इन दोनों के बीच एक ही चीज खड़ी है और वह है E-G-O, अहं। और जब इस अहं को छोड दिया जाता है, फ़ेंक दिया जाता है, समर्पित किया जाता है तब उसकी जगह G-O-D, भगवान आ जाता है।"– चारिजी.

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
ज़ोनल की गतिविधियां
मार्च २००९ केवल व्यक्तिगत वितरण के लिये भाग–२ अंक–२

चरित्र निर्माण पर अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम

डिग्बोई केंद्र, असम में ४ जनवरी को पूरे दिन के अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। असम और अरुणाचल प्रदेश के तिनसुकिया, तेज़पुर, ज़ोरहाट, सिबसागर, दुलियाजान, नाहरकटिया, ड़िबरुगढ़, दुमदुमा जैसे अनेक केन्द्रों से लगभग २०० अभ्यासियों ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया। मालिक की पिछली कुछ वार्ताओं को ध्यान में रखते हुए 'अभ्यासियों के चरित्र निर्माण' को प्रमुखता दी गयी। गुवाहाटी के भाई अशोक सेनगुप्ता ने लालाजी के शब्दों का हवाला देते हुए कहा कि "कोई भी व्यक्ति आध्यात्मिकता में कितना ही ऊँचा क्यों न पहुँच चुका हो, परन्तु यदि उसका आचरण अनैतिक है तो आध्यात्मिकता ने उसे छुआ तक नहीं है"। इस बात पर भी जोर दिया गया कि मालिक हमारी आध्यात्मिक प्रगति के लिये ज़िम्मेदार हैं किन्तु हमारे चरित्र एवं मनोवृति को बदलने के लिये हम ही ज़िम्मेदार हैं। और साथ ही बाबूजी के शब्दों को उच्चतम महत्व देते हुए कहा कि स्वयं के साथ सच्चे रहो" ताकि हम भीतर से अपने आपको बदल सकें । इस कार्यक्रम के बाद प्रश्नोत्तर सत्र हुआ, जिसमें ज्यादातर प्रश्न युवाओं की तरफ़ से आए जिसने स्वयं के प्रति वचनबद्धता की तरफ़ सभी लोगों को प्रेरित किया।

भद्रावती, कर्नाटक

भद्रावती में मिशन के पहले समारोह का आयोजन २ फ़रवरी को हुआ। इस शहर मे स्वतन्त्रता से पूर्व प्रथम स्टील के कारखाने की स्थापना एम विशेश्वरइया ने १९२२ में की थी।

यह केन्द्र अगस्त २००८ में ३ अभ्यासियों से शुरू हुआ था और अब वहाँ मालिक के आशीर्वाद, स्थानीय अभ्यासियों और स्वयंसेवकों के उत्साह और शिमोगा, टिपटूर और बैंगलोर के प्रशिक्षकों के निरन्तर प्रयास की वजह से अभ्यासियों की संख्या ३० हो गयी है। समारोह का आयोजन बहन नागमणी के घर पर हुआ और भोजन की व्यवस्था स्थानीय अभ्यासियों ने की। बैंगलोर से बहन रूपा और भाई प्रमोद ने पूरे दिन के कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें लालाजी महाराज का वीडियो दिखाया गया, साधना पर चर्चा हुई और मालिक के अनेक उद्धरणों को लेकर मूक अभिनय किया गया, जिसने सभी अभ्यासियों को पूरे दिन वहाँ रोके रखा। युवा स्वयंसेवकों के उत्साह और इस नये केन्द्र के अभ्यासियों ने जिस अविलंबिता से आश्रम समारोह के आयोजन में रुचि दिखाई वह देखकर अत्यंत हर्ष हो रहा था।

युवा संगोष्ठी – भविष्य की तैयारी

बैंगलोर में २४ से २६ जनवरी तक 'भविष्य की तैयारी' पर आधारित एक आवासीय युवा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में १८ से ३५ आयु–वर्ग के लगभग २५ अभ्यासियों ने भाग लिया। प्रतिदिन की शुरुआत सत्संग, वार्ता, और कुछ चुने हुए विषयों पर चर्चा के साथ हुई और उसके बाद शाम को स्वयंसेवी कार्य किया गया।

पहले दिन का कार्यक्रम चरित्र निर्माण, संघ निर्माण (टीम–कार्य) भाईचारा, और सहज मार्ग के मूल तत्व पर आधारित था। सभी अभ्यासियों ने उन संदेशों को अन्दर की गहराइयों तक महसूस किया।

दूसरे दिन के सत्र में मिशन की विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया गया। बाद में अभ्यासियों ने अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न स्वयंसेवी कार्यों में हिस्सा लिया और उन्हें भलीभाँति निभाया।

तीसरे दिन अभ्यासियों ने अपने अनुभव आपस में बाँटे और सभी अभ्यसियों के जीवन में मालिक के प्रभाव का अनुभव हुआ। इस शिविर में अभ्यासियों द्वारा खेली गयी नाटिका, संघ निर्माण पर आधारित खेल, और देर शाम को आध्यात्मिक महत्वों पर आधारित कुछ फ़िल्में देखी गयीं। इस कार्यक्रम के जरिये हमें युवाओं तक पहुँचने का महत्वपूर्ण मार्ग मिला, जो मिशन के काम के लिये आस्था और उत्साह से भरे हुए हैं और अपनी शक्तियों को सही दिशा में लगाना चाहते हैं।

अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम, चंद्रपुर

चंद्रपुर (महाराष्ट्र) में, २८ दिसम्बर २००८ को सभी अभ्यासियों का ध्यान बेहतर और यथायोग्य साधना की तरफ़ आकर्षित करने के लिये हिन्दी में 'अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम' आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सहज मार्ग साधना और दर्शन को प्रस्तुत करना था। सुबह सत्संग के बाद पूज्य मालिक द्वारा दी गयी वार्ता की वीडियो सी डी 'ईश्वर से सम्बंध जोडो' दिखायी गयी। इसके बाद अनेक विषयों जैसे मनुष्य जीवन का उद्देश्य, गुरू की भूमिका, प्रार्थना, ध्यान, सफाई और डायरी–लेखन के महत्व पर वार्ता हुई। दोपहर के सत्र में कुछ वक्ताओं ने सहज मार्ग साधना के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किये। इसके बाद साधना में अभ्यासियों की व्यक्तिगत रुचि और सही दृष्टिकोंण को जानने के लिये एक प्रश्नावली बाँटी गयी। कार्यक्रम का समापन शाम के सत्संग से हुआ।

औरंगाबाद में बच्चों की कार्यशाला

औरंगाबाद में १८ जनवरी २००९ को एक दिन के लिये बच्चों की कार्यशाला का आयोजन किया गया। मस्ती और ज्ञान से भरे दिन को शुरू करने और इस तरह से जीवन जीने के लिये ५ से १२ वर्ष के लगभग २२ बच्चे एकत्रित हुए। कार्यक्रम की शुरूआत प्रार्थना से हुई और बाद में चित्रण प्रतियोगिता हुई। वहाँ पर एक अनोखे सत्र का आयोजन किया गया जिसमें बच्चों ने प्रकृति के विभिन्न तत्वों को पहचाना और उनके बारे में बताया। सभी बच्चों को आपस में मिलजुल कर खेलते देखकर हृदय आन्नदित हो उठा। बच्चों को आशा, संरक्षण कृतज्ञता पर आधारित कहानियाँ सुनाई गईं।

मूल्य आधारित आध्यत्मिक शिक्षा (वी बी एस ई) शिक्षक विकास तथा सुविधा कार्यक्रम

जनवरी ३–४,२००९ को रांची में दो दिन के लिये राज्य स्तर के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य झारखंड राज्य में वी. बी. एस. ई. की गतिविधियों को बढाना था । इस कार्यक्रम का संचालन भाई अरुन दवे, बहन लीना दवे तथा कलकत्ता से आये शिक्षकों ने जोन प्रभारी (ZiC) डा. जी एम भटनागर, भाई अरुन कुमार लाल और भाई मनोज तिवारी के साथ मिलकर किया, जिसमें लगभग ५९ लोगों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकों ने वी बी एस ई कार्यक्रम की संरचना एवं प्रस्तुतीकरण के तरीकों पर प्रकाश डाला, जोकि ऐसे केंद्रों के लिये अत्यंत लाभदायक था जहाँ अभी तक यह गतिविधियाँ शुरू नहीं हुई हैं।

इस कार्यक्रम में बताया गया कि यह कार्यक्रम मूल्यों की अवधारणा फ़ैलाने के लिये है और जब भी हमें इसका अवसर मिले, हमे इसका विस्तार करना चाहियें। हालाँकि यह कार्यक्रम मुख्यत: विद्यालयों एवं सम्बंधित गतिविधियों के लिये है, परन्तु इसे विद्यालयों तक ही सीमित नहीं रखना चाहियें। एक अभ्यासी के जीवन के सभी पहलुओं में वी बी एस ई का व्यापक रूप में प्रयोग होना चाहियें। भाई दवे ने शिक्षकों, जोकि वी बी एस ई कार्यक्रम के असली वाहक हैं, को प्रोत्साहित करने की जरूरत पर अपने विचार व्यक्त किये और इस बात पर जोर दिया कि हमें धीरे–धीरे प्रत्येक व्यक्ति को आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर करना है। बहन लीना ने जनसभा में बोलने के लिये कुछ सुझाव और जानकारी दी। भाई मनोज ने व्यक्तिगत विकास और संतुलित अस्तित्व पर अपने विचार प्रस्तुत किये। सहभागियों ने अपने चुने हुए विषयों पर प्रस्तुति दी और उनकी संभाषण कला को और बेहतर बनाने के लिये उनकी प्रस्तुति पर मत व्यक्त किये गये।

तनाव–प्रबंधन और संतुलित विकास

मध्य प्रदेश में गुरू दत्तात्रया इन्स्टीटयूट आफ टेकनालोजी, इन्दौर, इन्दौर विश्वविद्यालय और राजगढ(जो इन्दौर से २०० किमी दूर है) जैसे अनेक केन्द्रों पर जनसभा का आयोजन किया गया। सत्र का विषय तनाव–प्रबंधन और संतुलित विकास था। उन्हें इस बात की जानकारी दी गई कि तनाव अनियन्त्रित मनस के कारण होता है और मनस का नियन्त्रण सिर्फ़ ध्यान के द्वारा ही मुमकिन है। हमारी पूर्व धारणा और पूर्वाग्रह हमें सही कार्य करने से रोक सकते हैं। आध्यात्मिकता हमें आन्तरिक तथा बाहरी जरूरतों के बीच में संतुलन स्थापित करने में मद्द करती है।

वहाँ उपस्थित लोगों को सहज मार्ग का परिचय दिया गया। गुरू दत्तात्रया इन्स्टीटयूट आफ टेकनालोजी में लगभग २०० विद्यार्थियों और ३० शिक्षकों ने भाग लिया। राजगढ में, अभ्यासियों ने आसपास के केंद्रों खिल्चिपुर, कुराबर और बैयौरा के साथ मिलकर एक सत्र का आयोजन किया। लगभग १२५ लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया और उनमें से ३५ लोगों ने साधना शुरू की। मुरैना में एक और जनसभा का आयोजन किया गया जिसमें ८३ लोगों ने भाग लिया और उनमें से ३३ लोगों ने साधना शुरू करने की इच्छा ज़ाहिर की।

इंजीनियरिंग कालेज के विद्यार्थियों को सहज मार्ग का परिचय, सोलापुर

१९ और २० जनवरी को सरकारी मेडिकल कालेज, सोलापुर (महाराष्ट्र) के अभ्यासी विद्यार्थियों ने बी आई जी इन्जीनियरिंग कालेज के विद्यार्थियों को सहज मार्ग का परिचय दिया। प्रत्येक सत्र में लगभग ३०० विद्यार्थी उपस्थित थे। हमारे सहज मार्ग के युवा वक्ताओं ने ध्यान की जरूरत और उपयोगिता के बारे में और मुख्यत: सहज मार्ग की ध्यान पद्धति के बारे में छात्र–समुदाय को बडे ही प्रभावशाली ढंग से बताया। यह साफ देखा जा सकता था कि विद्यार्थी श्रोता पूरी तरह सहमत थे क्योंकि उन्ही के आयु–वर्ग के लोग पूरे विश्वास और अपने अनुभव द्वारा बोल रहे थे। वार्ताओं के बाद एक प्रश्नोत्तर सत्र हुआ जिसके बाद लगभग १२६ विद्यार्थियों ने साधना शुरू करने की अपनी इच्छा ज़ाहिर की। विद्यार्थियों को मूलभूत परिचयात्मक साहित्य दिया गया और साधना शुरू करने में इच्छुक विद्यार्थियों के लिये कालेज प्रबंधन के लोगों के सहयोग से छात्रावास में ही सिटिंग की व्यवस्था की गयी। यहाँ मिली भारी प्रतिक्रिया से प्रोत्साहित होकर हमनें एक और इंजीनीयरिंग कालेज, बी एम इन्स्टीटयूट आफ टेक्नालोजी, सोलापुर से सम्पर्क किया और उन्होंने हमारा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। प्रिय मालिक के लिये कृतज्ञता के भाव से स्वयंसेवकों ने इसे काम का इनाम और काम समझ कर स्वीकार किया।

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
ज़ोनल की गतिविधियां
मार्च २००९ केवल व्यक्तिगत वितरण के लिये भाग–२ अंक–२

अभ्यासियों से सम्पर्क

चेन्नई में पंजीक्रत अभ्यासियों की संख्या ८,५०० है जिनमें से मणपाक्कम आश्रम में रविवार सत्संग में स्थानीय अभ्यासियों की संख्या लगभग २,५०० तक रहती है। २८ दिसम्बर को चेन्नई के उपकेन्द्र क्रोमपेट द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमे लगभग १२० अभ्यासियों ने भाग लिया, जोकि सभी पंजीक्रत अभ्यासियों को निमंत्रित करने के लिये किये गये प्रयासों का परिणाम था। वहाँ पर दो लघु वार्तायें दी गयीं जिनमें से एक स्थानीय प्रशिक्षक द्वारा साधना पर दी गयी और दूसरी में एक अभ्यासी ने सहज मार्ग में अपने अनुभवों और साधना से हुए लाभ पर चर्चा की। इसके बाद प्रश्नोत्तर सत्र हुआ जिसमे शंका निवारण के साथ–साथ साधना के बारे में ठीक से समझाया गया। साधना से लाभ उठाने के लिये नियमितता पर भी बल दिया गया।

मालिक ने बार–बार "बिक्री के बाद सेवा" के दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल दिया है। प्रत्येक अभ्यासी आन्तरिक जरूरत के कारण अभ्यास शुरू करता है। अभ्यासियों तक पहुँच कर साधना शुरू करने में उनकी मद्द करना एक महत्वपूर्ण कार्य है और इस कार्यक्रम के द्वारा यह उद्देश्य प्रभावशाली ढंग से प्राप्त होता प्रतीत हुआ।

आध्यात्मिक जीवन के लिये व्यक्तिगत चरित्र एक मूल आधार

१३ और १४ दिसम्बर २००८ को पनवेल के बाबूजी मेमोरियल आश्रम में भाई अजय भट्टर ने ३० से ५० आयु वर्ग के लोगों के लिये इस विषय पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया।

पूणे में अक्टूबर २००८ में हुए युवा समारोह की सफलता से प्रोत्साहित होकर अभ्यासियों ने बडे लोगों के लिये भी इसी प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में व्याख्यान, गतिविधियां, नाटिका, प्रश्नोत्तरी, खेल, केवल उन्ही को देखो तथा अन्य विषय जैसे–चरित्र जीवन की रक्षा करता है, भाईचारा, अपने अन्दर सहज मार्ग को दिखाओ, लायक बनने के लिये सेवा आदि पर प्रस्तुतियाँ दी गईं। पूणे और नासिक के आसपास के केन्द्रों से भी अभ्यासी शामिल हुए।

एक के बाद एक सभी कार्यक्रम हुए जिसमे आत्मनिरीक्षण और डायरी–लेखन जैसे विषयों को पर्याप्त समय दिया गया। सभी कार्यक्रम भाई अजय भट्टर के साथ विचार–विमर्श करके तय किये गये थे, और वे एक दूसरे से इतने जुडे हुए थे कि उन्होंने अभ्यासियों को इस तरह वशीभूत कर रखा था कि दो दिन भी बहुत कम प्रतीत हो रहे थे। कार्यक्रम के अन्त में यह सुझाव दिया गया कि इस प्रकार के कार्यक्रम जल्दी–जल्दी होने चाहियें।

उत्तर आन्ध्र प्रदेश, कोयला बेल्ट क्षेत्र में जनसभा

उत्तरी आन्ध्र प्रदेश, जोकि कोयला बेल्ट के नाम से प्रसिद्ध है, में ५० किमी के दायरे में मिशन के अनेक केन्द्र हैं। इन केन्द्रों में आश्रमों का निर्माण कुछ समय पहले कोयला खानों के अधिकारियों की मदद से किया गया था, जिनमें से अनेक हमारे अभ्यासी हैं। जयपुर इन सभी स्थानों के केन्द्र में स्थित है। यहाँ पर १०.५ एकड की आश्रम की जमीन है जिसके चारों तरफ़ अभ्यासियों के लिये आवास–कालोनी बनाने की योजना है। २५ जनवरी, रविवार को आसपास के केन्द्रों से लगभग २०० अभ्यासी, मंकेरियल के प्रशिक्षण संस्थान में पहले सत्संग के लिये एकत्रित हुए। उत्तर आन्ध्र प्रदेश के जोन–प्रभारी और कुछ अभ्यासी हैदराबाद से इस जनसभा के लिये आये।

मंकेरियल के बाद गोलेटी के नये केन्द्र पर जनसभा हुई। बहुत ही कम समय में इस केन्द्र में अभ्यासियों की संख्या शून्य से २० हो गयी है। वहाँ के खान में काम करने वाले अधिकारियों से काफी प्रोत्साहन मिलता है और वे पुरानी इमारत को भविष्य में मिशन की गतिविधियों के लिये ठीक कर रहे हैं। गोलेटी में सत्संग के बाद अभ्यासियों का एक समूह बेलमपल्ले आश्रम गया। बेलमपल्ले में लगभग ८० से ज्यादा अभ्यासियों ने सत्संग में भाग लिया। यात्रियों ने गोदवरीखानी में रात बितायी।

अगले दिन, २६ दिसम्बर का आरम्भ गोदावरीखानी में सुबह ६.३० के सत्संग से हुआ। नाश्ते के बाद एक समूह गोदावरी नदी की उत्तर दिशा में स्थित जयपुर आश्रम की जगह पर गये। वहाँ पर नीम और पीपल के पेडों की प्राकृतिक छाँव में १० बजे का सत्संग हुआ। वह स्थान मालिक की उपस्थिति से अलौकिक लग रहा था।

जम्मू में शिक्षकों के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम

जम्मू में २६ जनवरी २००८ को समाज के विभिन्न वर्गों में सहज मार्ग के बारे में बोलने के लिये शिक्षकों को तैयार करने के लिये तीन दिन का एक आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें जम्मू–कश्मीर और हिमाचल प्रदेश से लगभग २४ पंजीक्रत सहभागियों (जिनमें से ७ प्रशिक्षक थे) ने भाग लिया। प्रत्येक को एक सप्ताह पहले से ही तैयारी के लिये एक विषय दिया गया था। दिल्ली से आये चार शिक्षकों ने कार्यक्रम का संचालन किया। उन्होने सहभागियों से बातचीत की और उनके सामर्थ्य, कमजोरियों और सुधार की गुंजाइश पर अपने मत दिये। सभी सहभागियों ने महसूस किया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम असीम आध्यात्मिक लाभ के साथ–साथ सहज मार्ग को ठीक से समझने के लिये अत्यंत मूल्यवान था।

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
प्रकाश के केन्द्र
मार्च २००९ केवल व्यक्तिगत वितरण के लिये भाग–२ अंक–२

शाहजहाँपुर आश्रम

शाहजहाँपुर के आश्रम का निर्माण, बाबूजी की अपने मालिक, लालाजी महाराज, फ़तेहगढ, को एक प्यार भरी भेंट थी। बाबूजी ने उचित भूमि ढूढने से लेकर आश्रम के निर्माण तक गहरी रुचि ली।

उन्होनें व्यक्तिगत रूप से संगमरमर के पत्थर को मँगवाने का निर्देश दिया, जिस पर खुदा था– सहज मार्ग पद्दति की जन्म भूमि। आश्रम, रेलवे स्टेशन से लगभग ८ किलोमीटर तथा रोडवेज़ के बस स्टेशन से लगभग ७ किलोमीटर दूर है।

शाहजहाँपुर आश्रम १५ एकड़ में फ़ैला हुआ है। यह शाहजहाँपुर–हरदोई रोड और राष्ट्रीय राजमार्ग (नेशनल हाईवे) नम्बर २४ के मोड़ पर स्थित है। आश्रम के ध्यान–कक्ष का निर्माण बाबूजी के मार्गदर्शन में १९७३ से १९७६ के बीच में हुआ। इस ध्यान–कक्ष को औपचारिक रूप से बाबूजी ने अपने मालिक लालाजी को ५ फ़रवरी १९७६ को बसन्त उत्सव के दौरान समर्पित किया।

ध्यान कक्ष में ८०० अभ्यासियों के बैठने का क्षमता है। इसमे तीन संलग्न बरामदे हैं तथा पूरब दिशा में मंच (स्टेज) है। मंच के पीछे की दीवार पर स्टेन्ड ग्लास का मिशन का चिन्ह (एम्बलेम) लगा है जोकि कनाडा के एक अभ्यासी द्वारा भेंट किया गया था। एम्बलेम, पूरब दिशा मे लगा है जिसके कारण उगते हुए सूरज के साथ उसके रंग बदलते हैं। फ़र्श के लिये हरे संगमरमर का पत्थर, अहमदाबाद के पास अंबाजी की पहाड़ियों से लाया गया था। हॉल का डिजाइन प्राकृतिक वातानुकूलन (एअर कंडिशनिंग) को ध्यान में रखकर बनाया गया है ताकि यह सर्दियों में गर्म और गर्मियों मे ठंडा रहे। हॉल के बाहर चारों तरफ़ आगरा के लाल पत्थरों से बना चबूतरा है और चारों तरफ़ की दीवार, आगरा के सफ़ेद पत्थर से ढ़की है।

एक साधारण दो मंजिला इमारत के निचले हिस्से में एक भाइयों और एक बहनों के लिये आवास–गृह (डारमिट्री) है। पहली मंजिल पर १४ कमरे हैं। उन १४ कमरों में से एक कमरा बाबूजी ने अपने पिता रायबहादुर श्री बद्रीप्रसाद की याद में तथा एक कमरा चारीजी ने अपनी माँ 'जानकी' की याद में समर्पित किया है।

आश्रम में बाबूजी का समाधि–स्थल, एक बडा रसोई घर तथा खाने का हॉल (डाइनिंग हॉल) है। बाबूजी व मास्टर की कॉटेज, ध्यान–कक्ष के दाँये व बाँये हैं। आश्रम की पश्चिमी दिशा में दो मुख्य द्वारों के बीच में तिकोने स्तंभ का एक फ़व्वारा है उसमे मिशन का चिन्ह लाल रंग के पत्थर से बना हुआ है, चारो तरफ़ ताँबे की चादर है और रंगीन पानी की फ़ुहारें, फ़व्वारे की शोभा बढाती हैं। फ़व्वारे के प्रत्येक दिशा में चार मेहराब, वास्तुशिल्प की सुन्दरता को और बढ़ाते हैं।

आश्रम का परिसर हरे–भरे लॉन, पेड़–पौधों और जड़ी–बूटियों से परिपूर्ण है जिसके कारण विभिन्न प्रकार के पक्षी आकर्षित होते हैं। बाबूजी के द्वारा लगाया गया कदम का पेड़ पिछले ३३ सालों से फ़लफ़ूल रहा है।

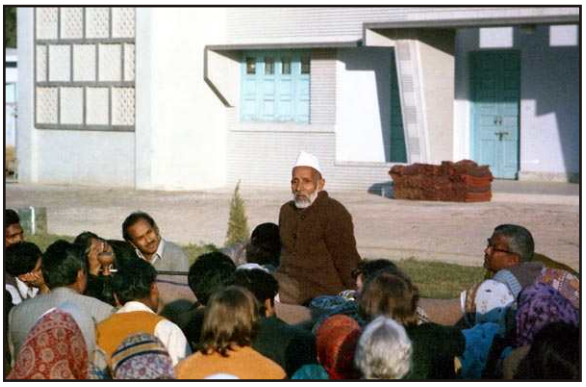

To subscribe to this Newsletter please visit
http://www.srcm.org/centers/as/in/newsletter/index.jsp
For feedback, suggestions and news articles please send email to
in.newsletter@srcm.org

© 2009 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved.
"Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.
This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM.